शब्द–ब्रह्म
E- ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिंदी काव्य में ग्रामीण जीवन

श्रीमती प्रीति व्यास (शोधार्थी)
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारत मूल रुप से ग्रामीण संस्कृति का दे श है । भारत की अधिकां श जनसंख्या अब भी गाँव में निवास करती है। इसलिये पंतजी ने भी अपनी कविता 'भारत माता' में उसे ग्राम वासिनी चित्रित किया है। भारत माता ग्रामवासिनी/ खेतों में फैला है श्यामल/ धूल भरा मैला-सा आँचल/ गंगा-यमुना में आंसू जल मिट्टी की प्रतिमा उदासिनी।' साहित्य में प्राचीन काल से ग्राम्य संस्कृति के गीत गाये जाते रहे हैं। मुख्य रूप से कृषि संस्कृति होने से भारतीय जनमानस के हृदय में ग्राम्य जीवन रचा-बसा है । प्रस्तुत शोध पत्र में हिंदी काव्य में ग्राम्य जीवन की विविध छटाओं का अवलोकन किया गया है।

प्रस्तावना

हमारे दे श के गाँवों का मुख्य धंधा कृषि है। भारतीय कृषक सीधा-सादा , कठोर व संघर्षमय जीवन जीता है। हमारे वेदों में कृषक को मूल देवता कहा है। भारत की अधिकां श जनसंख्या आज भी गावों में निवास करती है। तब ग्रामीण संस्कृति का चित्रण साहित्यकार की लेखनी से कैसे अछूता रह सकता है। असल में साहित्यकार तो उसी यथार्थ को अभिव्यक्त करता है या वह अपनी लेखनी का माध्यम बनाता है , जिसे वह अनुभूत करता है। प्रेमचंद स्वयं इस तथ्य को स्वीकार करते हुए कहते हैं कि "हम जीवन में जो कुछ देखते हैं या जो कुछ हम पर से गुजरती है वही अनुभव और चोटें कल्पना में पहुँच कर हमें साहित्य सृजन की प्रेरणा देती है।"

अधिकांश साहित्यकारों ने अपने साहित्य में ग्रामीण जीवन का चित्रण किया है। प्रेमचंदजी का कथा साहित्य तो ग्रामीण जीवन से भरा हुआ है। लेकिन साहित्य का पद्य भाग भी इससे अछूता नहीं है। भक्तिकाल के साहित्य में सूरदास और तुलसीदास के माध्यम से ग्रामीण संस्कृति का चित्रण हुआ है। सूरदास ने 'सूरसागर' में कृष्ण की लीलाओं के माध्यम से ब्रज की झांकी प्रस्तुत की है। वहीं तुलसीदाजी ने भी अपने काव्य में तत्कालीन समाज का चित्रण किया है , जिसमें किसान की दीनहीन अवस्था का का चित्रण किया गया है।

हिंदी काव्य में ग्राम्य जीवन

सूरदास ने अपने साहित्य में भारतीय ग्रामीण जीवन का आकर्षक चित्र प्रस्तुत किया है। जिन दृश्यों और प्राकृतिक परिवे श में कृष्ण की बाललीला का सन्निवे श हुआ है , उनसे भावना द्वारा मन में विलक्षण आनंद का संचार होता है। सूरदास ने 'सूरसागर' में ब्रज की झांकी प्रस्तुत की है। इसके अन्तर्गत सूरदास ने कृष्ण की बाललीलाओं को चित्रित किया है। कृष्ण का लालन-पालन बड़े ही लाड़ -प्यार से हुआ है। सूरदास के अनुसार कृष्ण अपने बालसखाओं के

शब्द–ब्रह्म
E- ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

साथ गोचरण की जिद करते हैं। इसका वर्णन सूरदास ने इस प्रकार किया है:

मैं अपनी सब गाय चरेहौ।
प्रातः होत बल के संग जैहो, तैरे कहे ना रैहों।।
ग्वाल बाल गाइनि के भीतर नेहहँु डर नहीं लागत।
आज सौवौ नन्द दुहाई, रैनि रहौगौ जागत।।

इसी प्रकार कृष्ण, यशोदा माँ से गाय दुहने की भी जिद करते हैं। सूरदास लिखते हैं :

मैं दुहिहौं मोहि दुहन सिखावाहूँ।।

दूसरी ओर तुलसीदास ने अपने काव्य में तत्कालीन समाज का उल्लेख करते हुए लिखा है :

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख भली,
बनिक को बनिज न, चाकर को चाकरी।
जीविका विहीन लोग, सीद्यमान सोच बस,
कहे एक एकन सो कहां जाई, का करी।।

आधुनिक काल में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' एवं सुमित्रानंदन पंत की कविताओं में भी ग्रामीण जीवन की झांकी देखने को मिलती है। 'निराला' ने अपने काव्य संग्रह 'अपरा' में संग्रहीत कविता 'लू के झोंकों झुलसे हुए थे जो ' के माध्यम से ग्रामीण जीवन को प्रस्तुत किया है। पंतजी ने भी अपने काव्य संग्रह 'ग्राम्या' में ग्रामीण जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत किया है। उनकी 'ग्राम युवती' की कुछ पंक्तियाँ इस तरह हैं :

रे दो दिन का
उसका यौवन ।
सपना छिन का
रहता न स्मरण
दुःखों से पिस,
दुर्दिन में घिस,
जर्जर हो जाता उसका तन ।
ढह जाता असमय यौवन धन।

वास्तव में ग्रामीण युवती की स्थिति कुछ इसी प्रकार की है।

निराला के साहित्य में ग्रामीण जीवन का चित्रण वर्षा आने पर किस प्रकार खेत के बीज नया जीवन पाते है तथा लू के झोंकों से जो बल किसान के माथे पर पड़ जाते हैं, वे भी वर्षा आने पर मिट जाते हैं। अर्थात़ वर्षा आने पर उसके माथे पर पड़ी चिन्ता की लकीरें समाप्त हो जाती हैं। इसे ही निराला ने अपनी कविता 'लू के झोंकों से झुलसे हुए थे जो' में इस प्रकार बताया है:

लू के झोंकों से झुलसे हुए थे जो,
भरा दौगरा उन्हीं पर गिरा।
उन्हीं बीजों को नये पर लगे,
उन्हीं पौधों से नया रस झिरा।
उन्हीं खेतों पर गये हल चले,
उन्हीं माथों पर गये बल पड़े,
उन्हीं पेड़ो पर नये फल फले,
जवानी फिरी जो पानी फिरा।

इसी प्रकार जब वर्षा नहीं होती है तो किसान अधीर होकर बादल को बुलाता है। इसका चित्रण निराला जी ने अपनी लम्बी कविता 'बादल राग' की इन पंक्तियों में किया है :

जीर्ण बाहु है, शीर्ण शरीर
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लव के वीर।
चूस लिया है उसका सार
हाड़ मात्र ही है आधार,
ऐ जीवन के पारावार।

पंतजी ने अपनी कविता 'ग्राम कवि' के माध्यम से ग्रामीण जीवन की दीनहीन अवस्था का चित्रण करते हुए यह बताया है कि वहां सुन्दरता का कोई मूल्य नहीं होता है। इस चित्रण को इन पंक्तियों में देखा जा सकता है :

यहाँ धरा का मुख कुरुप है,

शब्द–ब्रह्म
E- ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कुत्सित गहित जन का जीवन,
सुन्दरता का मूल्य वहां क्या
जहां उदर है क्षुब्ध, नग्न तन
जहां दैन्य जर्जर असंख्य जन
पशु - जघन्य क्षण करते यापन,
कीड़ों से रेंगते मनुज शिशु,
जहां अकाल वृद्ध है यौवन।

इसी प्रकार से गाँव में ही युगों का इतिहास , सभ्यता और संस्कृति संचित रहती है। इसे ही पंतजी ने अपनी कविता "ग्राम" के माध्यम से इस प्रकार बताया है :

वृहद्र ग्रंथ मानव जीवन का काल ध्वंस से कवलित,
ग्राम आज है पृष्ठ जनों की करुण कथा का जीवित।
युग-युग का इतिहास सभ्यताओं का इसमें संचित,
संस्कृतियों की ह्रास वृद्धि जन षोषण से रेखांकित।

ग्रामीण संस्कृति में गाँव के प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे के सुख -दुख में भागीदार बनते हैं। यदि किसी लड़की की बिदाई होती है , तो प्रत्येक ग्रामवासी करुणा से भर जाता है। इसी बात को पंतजी ने अपनी कविता 'ग्रामवधू' में अभिव्यक्त किया है :

जाती ग्राम वधू पति के घर।
माँ से मिल गोदी पर सिर धर
गा-गा बिटिया रोती जी भर,
जन-जन का मन करुणा कातर,
जाती ग्राम वधू पति के घर।

गाँव में स्वास्थ्य शिक्षा तथा ज्ञान का अभाव रहता है। गाँवों में सुख-सुविधाएं पहुँच नहीं पाती हैं, इसलिये वहां के बच्चे भी उपेक्षित -सा जीवन जीते है। वे ज्ञान, शिक्षा तथा स्वास्थ्य से वंचित रहते हैं और सारी सुख-सुविधाओं से दूर रहते हैं। इसे ही पंतजी ने अपनी कविता 'वे लड़के' के माध्यम से इस प्रकार बताया है :

कोई खंडित कोई कुंठित,
कृष बाहु, पसलियाँ रेखांकित
टहनी सी टाँगे, बढ़ा पेट,
टेढे-मेढे, विकलांग घृणित।
विज्ञान चिकित्सा से वंचित,
ये नहीं धात्रियों से रक्षित,
ज्यों स्वास्थ्य सेज हो, ये सुख से
लोटते धूल में चिर परिचित।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि भक्तिकाल से लेकर आज तक के साहित्यकारों ने अपने साहित्य में कृषक जीवन को प्रस्तुत किया है। सूरदास ने ब्रज की संस्कृति को कृष्ण लीलाओं के माध्यम से वर्णित किया है। वहीं तुलसीदास ने 'कवितावली' में किसानों की तत्कालीन स्थिति को चित्रित किया है। निराला ने भी किसान की दीनहीन द शा को 'बादल राग' कविता के माध्यम से प्रस्तुत किया है। पंत का काव्य संग्रह 'ग्राम्या' संपूर्ण ग्रामीण जीवन के चित्रण से भरपूर है।

संदर्भ ग्रंथ

1 सूरसागर, सूरदास
2 कवितावली, तुलसीदास, गीता प्रेस गोरखपुर , वर्ष 1980
3 अपरा काव्य संग्रह , सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', राजकमल प्रकाशन, वर्ष 2006
(बादल राग भाग 6)
4 ग्राम्या, सुमित्रा नंदन पंत, लोकभारती प्रकाशन, मार्च 02, वर्ष 2001